FAIZANE KHWAJA GHAREEB NAWAZ رَحمَۃُ اللہِ تَعالٰی عَلَیہ (HINDI)

फ़ैज़ाने

رَحمَۃُ اللہِ تَعالٰی عَلَیہ

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

(دعوتِ اسلامی)

शो'बा फ़ैज़ाने औलिया

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مُستَطرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

(अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

ताlिबे ग़मे मदीना बक़ीअ़ व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी इस इल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

फ़ैज़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **''अल मदीनतुल इल्मिय्या''** ने येह रिसाला ''उर्दू'' ज़बान में पेश किया है और **मजलिसे तराजिम** ने इस रिसाले का **''हिन्दी''** रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (TRANSLITERATION) या'नी ज़बान तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लती** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या WhatsApp) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئ	ु = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,
नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

फ़ैज़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रह़मतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़निबीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : لَا تَجْعَلُوْا بُیُوْتَكُمْ قُبُوْرًا وَلَا تَجْعَلُوْا قَبْرِیْ عِیْدًا या'नी अपने घरों को क़ब्रिस्तान मत बनाओ और न ही मेरी क़ब्र को ईद बनाओ وَصَلُّوْا عَلَیَّ فَاِنَّ صَلَاتَكُمْ تَبْلُغُنِیْ حَیْثُ كُنْتُمْ या'नी और मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ा करो, बेशक तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है चाहे तुम जहां भी हो ।[1]

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मिरआतुल मनाजीह़ में इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : अपने घरों को क़ब्रिस्तान की त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से ख़ाली मत रखो बल्कि फ़राइज़ मस्जिदों में अदा करो और नवाफ़िल घर में । और जैसे ईदगाह में साल में सिर्फ़ दो बार जाते हैं ऐसे मेरे मज़ार पर न आओ बल्कि अकसर ह़ाज़िरी दिया करो जैसे ईद के दिन खेल कूद के लिये मैलों में जाते हैं ऐसे तुम हमारे रौज़े पर बे अदबी से न आया करो बल्कि बा अदब रहा करो ।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 ...ابو داود، کتاب المناسک، باب زیارۃ القبور، ۲/۳۱۵، حدیث: ۲۰۴۲

2... मिरआतुल मनाजीह़, 1/101

www.dawateislami.net

अ़र्सए दराज़ से पाक व हिन्द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों की तवज्जोह का मर्कज़ रहा है। मुख़्तलिफ़ अदवार में यके बा'द दीगरे बे शुमार औलियाए किबार عَلَیۡہِم رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَفَّار ने हिन्द का रुख़ किया और लोगों को न सिर्फ़ दीने इस्लाम की दा'वत दी बल्कि कुफ़्रो शिर्क की तारीकियों में भटकने वाले अन गिनत ग़ैर मुस्लिमों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वह्दानिय्यत और प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत से आगाह कर के उन्हें दाइरए इस्लाम में दाख़िल भी फ़रमाया।

ताजुल औलिया, सय्यिदुल अस्फ़िया, वारिसुन्नबी, अ़ताए रसूल, सुल्तानुल हिन्द, ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सय्यिद मुईनुद्दीन ह़सन सन्जरी चिश्ती अजमेरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی का शुमार भी इन्ही बुज़ुर्गों में होता है। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ छटी सदी हिजरी में हिन्द तशरीफ़ लाए और एक अ़ज़ीमुश्शान रूह़ानी व समाजी इन्क़िलाब का बाइ़स बने ह़त्ता कि हिन्द का ज़ालिमो जाबिर हुक्मरान भी आप की शख़्सिय्यत से मरऊ़ब हो कर ताइब हुवा और अ़क़ीदत मन्दों में शामिल हो गया। आइये ! ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ज़िन्दगी के ह़सीन पहलूओं को मुलाह़ज़ा कीजिये।

विलादते बा सआ़दत

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सय्यिद मुईनुद्दीन ह़सन सन्जरी चिश्ती अजमेरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی 537 हिजरी ब मुताबिक़ 1142 ईसवी में सिजिस्तान या सीस्तान के अ़लाक़े '**सन्जर**' में पैदा हुवे।(1)

1…इक़्तिबासुल अन्वार, स. 345

www.dawateislami.net

नाम व सिलसिलए नसब

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इस्मे गिरामी ह़सन है और आप नजीबुत्त़रफ़ैन ह़सनी व हुसैनी सय्यिद हैं । आप के अल्क़ाब बहुत ज़ियादा हैं मगर मश्हूरो मा'रूफ़ अल्क़ाब में **मुईनुद्दीन, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, सुल्त़ानुल हिन्द, वारिसुन्नबी** और **अ़त़ाए रसूल** वग़ैरा शामिल हैं । आप का सिलसिलए नसब सय्यिद मुईनुद्दीन ह़सन बिन सय्यिद ग़ियासुद्दीन ह़सन बिन सय्यिद नजमुद्दीन त़ाहिर बिन सय्यिद अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ है ।(1)

वालिदैने करीमैन

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के वालिदे माजिद सय्यिद ग़ियासुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जिन का शुमार **'सन्जर'** के उमरा व रुअसा में होता था इन्तिहाई मुत्तक़ी व परहेज़गार और साह़िबे करामत बुज़ुर्ग थे । नीज़ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वालिदए माजिदा भी अकसर अवक़ात इ़बादतो रियाज़त में मश्ग़ूल रहने वाली नेक सीरत ख़ातून थीं ।(2)

जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पन्दरह साल की उ़म्र को पहुंचे तो वालिदे मोह़तरम का विसाले पुर मलाल हो गया । विरासत में एक **बाग़** और एक **पन चक्की** मिली । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उसी को ज़रीअ़ए मआ़श बना लिया और ख़ुद ही बाग़ की निगहबानी करते और दरख़्तों की आबयारी फ़रमाते ।(3)

1....मुईनुल हिन्द ह़ज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी, स. 18 मुलख़्ख़सन वग़ैरा

2....**अल्लाह** के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 506 बित्तग़य्युर

3....मिरआतुल अस्रार, स. 593 बित्तग़य्युर

www.dawateislami.net

वलिय्युल्लाह के जूठे की बरकत

एक रोज़ हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی बाग़ में पौदों को पानी दे रहे थे कि एक मजज़ूब बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम क़न्दोज़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ बाग़ में तशरीफ़ लाए। जूं ही हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡمُبِیۡن की नज़र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस मक़्बूल बन्दे पर पड़ी, फ़ौरन दौड़े, सलाम कर के दस्त बोसी की और निहायत अदबो एह़तिराम के साथ दरख़्त के साए में बिठाया। फिर इन की ख़िदमत में इन्तिहाई आ़जिज़ी के साथ ताज़ा अंगूरों का एक ख़ोशा पेश किया और दो ज़ानू बैठ गए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली को इस नौ जवान बाग़बान का अन्दाज़ भा गया, ख़ुश हो कर खली (तल या सरसों का फूक) का एक टुकड़ा चबा कर आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के मुंह में डाल दिया। खली का टुकड़ा जूं ही ह़ल्क़ से नीचे उतरा, आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के दिल की कैफ़िय्यत यक्दम बदल गई और दिल दुन्या की मह़ब्बत से उचाट हो गया। फिर आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने बाग़, पन चक्की और सारा साज़ो सामान बेच कर इस की क़ीमत फ़ुक़रा व मसाकीन में तक़्सीम फ़रमा दी और ह़ुसूले इल्मे दीन की ख़ातिर राहे ख़ुदा के मुसाफ़िर बन गए।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा वाक़िए से हमें येह दर्स मिलता है कि जब हम किसी मजलिस में बैठे हों और हमारे बुज़ुर्ग,

1....मिरआतुल अस्रार, स. 593 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

असातिज़ा, मां-बाप, या पीरो मुर्शिद आ जाएं तो हमें उन की ता'ज़ीम के लिये खड़ा हो जाना चाहिये और उन्हें इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के साथ बिठाना चाहिये । याद रखिये ! अदब ऐसी शै है कि जिस के ज़रीए इन्सान दुन्यवी व उख़रवी ने'मतें ह़ासिल कर लेता है और जो इस सिफ़त से मह़रूम होता है वोह इन ने'मतों का भी ह़क़दार नहीं होता । शायद इसी लिये कहा जाता है कि **'बा अदब बा नसीब, बे अदब बे नसीब'** यक़ीनन अदब ही इन्सान को मुमताज़ बनाता है, जिस त़रह़ रैत के ज़र्रों में मोती अपनी चमक और अहम्मिय्यत नहीं खोता इसी त़रह़ बा अदब शख़्स भी लोगों में अपनी शनाख़्त को क़ाइम व दाइम रखता है । लिहाज़ा हमें भी अपने बड़ों का अदबो एह़तिराम करने और छोटों के साथ शफ़्क़त व मह़ब्बत से पेश आना चाहिये । आइये ! इस ज़िम्न में 3 अह़ादीसे मुबारका सुनिये और अ़मल का जज़्बा पैदा कीजिये ।

1. दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ अनस ! बड़ों का अदबो एह़तिराम और ता'ज़ीम व तौक़ीर करो और छोटों पर शफ़्क़त करो, तुम जन्नत में मेरी रफ़ाक़त पा लोगे ।[1]

2. नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने हमारे छोटों पर रह़्म न किया और हमारे बड़ों की ता'ज़ीम न की वोह हम में से नहीं ।[2]

---

1 ... شعب الایمان، باب فی رحم الصغیر، ۷/۴۵۸، حدیث: ۱۰۹۸۱

2 ... ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی رحمة الصبیان، ۳/۳۶۹، حدیث: ۱۹۲۶

www.dawateislami.net

3. सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो जवान किसी बूढ़े का उस की उ़म्र की वजह से इकराम करे इस के बदले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी के ज़रीए उस की इ़ज़्ज़त अफ़ज़ाई करवाता है ।(1)

हुसूले इ़ल्म के लिये सफ़र

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने 15 बरस की उ़म्र में हुसूले इ़ल्म के लिये सफ़र इख़्तियार किया और समरक़न्द में ह़ज़रते सय्यिदुना मौलाना शरफ़ुद्दीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللهِ الْمُبِیْن की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर बा क़ाइदा इ़ल्मे दीन का आग़ाज़ किया । पहले पहल क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ किया और बा'दे अज़ां इन्ही से दीगर उ़लूम ह़ासिल किये ।(2) मगर जैसे जैसे इ़ल्मे दीन सीखते गए ज़ौक़े इ़ल्म बढ़ता गया, चुनान्चे, इ़ल्म की प्यास को बुझाने के लिये बुख़ारा का रुख़ किया और शोहरए आफ़ाक़ आ़लिमे दीन मौलाना हुसामुद्दीन बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللهِ الْبَارِی के सामने ज़ानूए तलम्मुज़ तह किया और फिर इन्ही की शफ़्क़तों के साए में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने थोड़े ही अ़र्से में तमाम दीनी उ़लूम की तक्मील कर ली । इस त़रह़ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने मजमूई तौर पर तक़रीबन पांच साल समरक़न्द और बुख़ारा में हुसूले इ़ल्म के लिये क़ियाम फ़रमाया ।(3)

1...ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ما جاء فی اجلال الکبیر، ۳/۴۱۱، حدیث: ۲۰۲۹

2...**अल्लाह** के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 508 मुलख़्ख़सन

3...**अल्लाह** के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 508 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

त़ालिब मत़लूब के दर पर

इस अ़र्से में उ़लूमे ज़ाहिरी की तक्मील तो हो चुकी थी मगर जिस तड़प की वजह से घर बार को ख़ैरबाद कहा था उस की तस्कीन अभी बाक़ी थी । चुनान्चे, किसी ऐसे त़बीबे ह़ाज़िक़ (माहिर) की तलाश में निकल खड़े हुवे जो दर्दे दिल की दवा कर सके । चुनान्चे, मुर्शिदे कामिल की जुस्त्जू में बुख़ारा से ह़िजाज़ का रख़्ते सफ़र बांधा । रास्ते में जब नैशापूर (सूबए ख़ुरासान रज़वी ईरान) के नवाह़ी अ़लाक़े **'हारवन'** (ہارۡوَن) से गुज़र हुवा और मर्दे क़लन्दर कुत़्बे वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान हारवनी (ہارۡوَنی) चिश्ती عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی का शोहरा सुना तो फ़ौरन ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे और इन के दस्ते ह़क़ परस्त पर बैअ़त कर के सिलसिलए चिश्तिय्या में दाख़िल हो गए ।[1]

यक दर गीर मोह्कम गीर

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ कई साल तक मुर्शिदे कामिल की ख़िदमत में ह़ाज़िर रहे और मा'रिफ़त की मनाज़िल त़ै करते हुवे बात़िनी उ़लूम से फ़ैज़याब होते रहे । ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा उ़स्मान हारवनी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی जहां भी तशरीफ़ ले जाते आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ इन का सामान अपने कन्धों पर उठाए साथ जाते नीज़ आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को कई मरतबा मुर्शिद के साथ ह़ज की सआ़दत भी ह़ासिल हुई ।[2]

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : जब मेरे पीरो मुर्शिद ख़्वाजा उ़स्मान हारवनी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی ने मेरी ख़िदमत और अ़क़ीदत देखी तो ऐसी कमाले ने'मत अ़त़ा फ़रमाई जिस की कोई इन्तिहा नहीं ।

1...मिरआतुल अस्रार, स. 594 मुलख़्ख़सन

2 ...**अल्लाह** के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 509 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

मुरीद हो तो ऐसा

यक़ीनन जिस त़रह़ हर मुह़िब की चाहत होती है कि मह़बूब की नज़रों में समा जाऊं और शागिर्द की आरज़ू येह होती है कि उस्ताद की आंखों का तारा बन जाऊं इसी त़रह़ एक मुरीद की दिली ख़्वाहिश येह होती है कि मैं अपने पीरो मुर्शिद का मन्ज़ूरे नज़र बन जाऊं मगर ऐसे क़िस्मत के धनी बहुत कम होते हैं जिन की येह तमन्ना पूरी हो जाए।

ह़ज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन ह़सन चिश्ती अजमेरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی बारगाहे मुर्शिद में इस क़दर मक़्बूल थे कि एक मौक़अ़ पर ख़ुद मुर्शिदे करीम ख़्वाजा उ़स्मान हारवनी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی ने फ़रमाया : हमारा मुईनुद्दीन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मह़बूब है हमें अपने मुरीद पर फ़ख़्र है।[1]

बारगाहे इलाही में मक़्बूलिय्यत

एक बार ह़ज के मौक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा उ़स्मान हारवनी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی ने मीज़ाबे रह़मत के नीचे आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का हाथ पकड़ कर बारगाहे इलाही में दुआ़ की : ऐ मौला ! मेरे मुईनुद्दीन ह़सन को अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमा। ग़ैब से आवाज़ आई : मुईनुद्दीन हमारा दोस्त है, हम ने इसे क़बूल किया।[2]

1....मिरआतुल अस्रार, स. 595

2....इक़्तिबासुल अन्वार, स. 349

www.dawateislami.net

बारगाहे रिसालत से हिन्द की सुल्तानी

बारगाहे रिसालत में ख़्वाजा मुईनुद्दीन عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡمُبِیۡن के मर्तबे का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुईनुद्दीन عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡمُبِیۡن को मदीने शरीफ़ की ह़ाज़िरी का शरफ़ मिला तो निहायत अदबो एह़तिराम के साथ यूं सलाम अ़र्ज़ किया : 'اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا سَیِّدَ الۡمُرۡسَلِیۡن وَخَاتَمَ النَّبِیِّیۡن' इस पर रौज़ए अक़्दस से आवाज़ आई : وَعَلَیۡکُمُ السَّلَامُ یَا قُطۡبَ الۡمَشَائِخ[1] नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को हिन्द की सुल्तानी भी बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही से अ़ता हुई । चुनान्चे, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ अपने रिसाले **'ख़ौफ़नाक जादूगर'** के सफ़ह़ा 2 पर रक़म त़राज़ हैं :

सिलसिलए आ़लिय्या चिश्तिय्या के अ़ज़ीम पेशवा ख़्वाजए ख़्वाजगान, सुल्त़ानुल हिन्द ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ह़सन सन्जरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی को मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا की ह़ाज़िरी के मौक़अ़ पर सय्यिदुल मुर्सलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से येह बिशारत मिली : ''ऐ मुईनुद्दीन ! तू हमारे दीन का मुईन (या'नी दीन का मददगार) है, तुझे हिन्दुस्तान की विलायत अ़त़ा की, अजमेर जा, तेरे वुजूद से बे दीनी दूर होगी और इस्लाम रौनक़ पज़ीर होगा ।''

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1.... **अल्लाह** के ख़ास बन्दे अ़ब्दुह़, स. 510 बित्तग़य्युर

www.dawateislami.net

सुल्तानुल हिन्द का सफ़रे हिन्द

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ इस बिशारत के बा'द हिन्द रवाना हुवे और समरक़न्द, बुख़ारा, उ़रूसुल बिलाद बग़्दाद शरीफ़, नैशापूर, तबरेज़, औश, अस्फ़हान, सब्ज़वार, ख़ुरासान, ख़िरक़ान, इस्तराबाद, बल्ख़ और ग़ज़नी वग़ैरा से होते हुवे हिन्द के शहर अजमेर शरीफ़ (सूबा राजस्थान) पहुंचे और इस पूरे सफ़र में आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने सेंकड़ों औलियाउल्लाह और अकाबिरीने उम्मत से मुलाक़ात की। चुनान्चे,

हम अ़स्र उ़लमा व औलिया से मुलाक़ात

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ **बग़्दादे मुअ़ल्ला** में ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म मुह़्युद्दीन सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوۡرَانِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और पांच माह तक बारगाहे ग़ौसिया से इक्तिसाबे फ़ैज़ किया। **तबरेज़** में शैख़ बदरुद्दीन अबू सईद तबरेज़ी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی की बारगाह से इ़ल्म की मीरास ह़ासिल की। **अस्फ़हान** में शैख़ मह़मूद अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوۡرَانِی के पास ह़ाज़िर हुवे और **ख़िरक़ान** में शैख़ अबू सईद अबुल ख़ैर और ख़्वाजा अबुल ह़सन ख़िरक़ानी قُدِّسَ سِرُّہُمَا النُّوۡرَانِ के मज़ारात पर ह़ाज़िरी दी। **इस्तराबाद** में ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ नासिरुद्दीन इस्तराबादी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡہَادِی से कसबे फ़ैज़ किया। **हरात** में शैख़ुल इस्लाम इमाम अ़ब्दुल्लाह अन्सारी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡبَارِی के मज़ार की ज़ियारत की और **बल्ख़** में शैख़ अह़मद ख़ज़रविय्या رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ख़ानक़ाह में क़ियाम फ़रमाया।[1]

1.... **अल्लाह** के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 510 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

हाकिमे सब्ज़वार की तौबा

सफ़रे हिन्द के दौरान जब हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का गुज़र अ़लाक़ा सब्ज़वार (सूबए ख़ुरासान रज़वी ईरान) से हुवा तो आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने वहां एक बाग़ में क़ियाम फ़रमाया जिस के वस्त में एक ख़ुश नुमा हौज़ था। येह बाग़ हाकिमे सब्ज़वार का था जो बहुत ही ज़ालिम और बद मज़हब शख़्स था। उस का मा'मूल था कि जब भी बाग़ में आता तो शराब पीता और नशे में ख़ूब शोरो ग़ुल मचाता। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने हौज़ से वुज़ू किया और नवाफ़िल अदा करने लगे। मुहाफ़िज़ों ने अपने हाकिम की सख़्त गीरी का हाल अ़र्ज़ किया और दरख़्वास्त की, कि यहां से तशरीफ़ ले जाएं कहीं हाकिम आप को कोई नुक़्सान न पहुंचा दे। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा हाफ़िज़ो नासिर (निगहबान व मददगार) है। इसी दौरान हाकिम बाग़ में दाख़िल हुवा और सीधा हौज़ की त़रफ़ आया। अपनी ऐ़शो इ़शरत की जगह पर एक अजनबी दुरवेश को देखा तो आग बगूला हो गया और इस से पहले कि वोह कुछ कहता आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने एक नज़र डाली और उस की काया पलट दी। हाकिम आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की नज़रे जलालत की ताब न ला सका और बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर पड़ा। ख़ादिमों ने मुंह पर पानी के छींटे मारे, जूं ही होश आया फ़ौरन आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के क़दमों में गिर कर बद मज़हबिय्यत और गुनाहों से ताइब हो गया और आप के दस्ते

www.dawateislami.net

मुबारक पर बैअ़त हो गया । पीरो मुर्शिद ह़ज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की इनफ़िरादी कोशिश से उस ने ज़ुल्मो जोर से जम्अ़ की हुई सारी दौलत अस्ल मालिकों को लौटा दी और आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की सोह़बत को लाज़िम पकड़ लिया । आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने कुछ ही अ़र्से में उसे फ़ुयूज़े बातिनी से माला माल कर के ख़िलाफ़त अ़त़ा फ़रमाई और वहां से रुख़्सत हो गए ।[1]

दाता के मज़ार पर ख़्वाजा की ह़ाज़िरी

इसी सफ़र में आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने ह़ज़रत दाता गन्ज बख़्श सय्यिद अ़ली हिजवेरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُاللّٰہِ الۡقَوِی के मज़ारे अक़्दस पर न सिर्फ़ ह़ाज़िरी दी बल्कि मुराक़बा भी किया और ह़ज़रते सय्यिदुना दाता गन्ज बख़्श رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का ख़ुसूसी फ़ैज़ ह़ासिल किया ।[2] मज़ारे पुर अन्वार से रुख़्सत होते वक़्त दाता गन्ज बख़्श رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की अ़ज़मत व फ़ैज़ान का बयान इस शे'र के ज़रीए़ किया :

گنج بخش فیضِ عالم مظہرِ نورِ خدا
ناقِصاں را پیر کامل کاملاں را رہنما

या'नी गन्ज बख़्श दाता अ़ली हिजवेरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُاللّٰہِ الۡقَوِی का फ़ैज़ सारे आ़लम पर जारी है और आप नूरे ख़ुदा के मज़हर हैं, आप का मक़ाम येह है कि राहे त़रीक़त में जो नाक़िस हैं उन के लिये पीरे कामिल और जो ख़ुद पीरे कामिल हैं उन के लिये भी राहनुमा हैं ।

1.... अल्लाह के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 511 मुलख़्ख़सन

2....मिरआतुल अस्रार, स. 598, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

तिलावते कुरआन और शब बेदारी

हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का मा'मूल था कि सारी सारी रात इबादते इलाही में मसरूफ़ रहते हत्ताकि इशा के वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र अदा करते और तिलावते कुरआन से इस क़दर शग़फ़ था कि दिन में दो कुरआने पाक ख़त्म फ़रमा लेते, दौराने सफ़र भी कुरआने पाक की तिलावत जारी रहती।[1]

पेट का कुफ़्ले मदीना

दीगर बुजुर्गाने दीन और औलियाए कामिलीन رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की त़रह़ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه भी ज़ियादा से ज़ियादा इबादते इलाही बजा लाने की ख़ातिर बहुत ही कम खाना तनावुल फ़रमाते ताकि खाने की कसरत की वजह से सुस्ती, नींद या गुनूदगी इबादत में रुकावट का बाइस न बने, चुनान्चे, आप के बारे में मन्क़ूल है कि सात रोज़ बा'द दो ढाई तोला वज़्न के बराबर रोटी पानी में भिगो कर खाया करते।[2]

लिबास मुबारक और सादगी

अल्लाह वालों की शान है कि वोह ज़ाहिरी ज़ैब व आराइश के बजाए बातिन की सफ़ाई पर ज़ोर देते हैं। हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के लिबास मुबारक में भी इन्तिहा दरजे की सादगी नज़र आती थी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का लिबास सिर्फ़ दो चादरों पर

1....मिरआतुल अस्रार, स. 595 बित्तग़य्युर

2....मिरआतुल अस्रार, स. 595 बित्तग़य्युर

www.dawateislami.net

मुश्तमिल होता और उस में भी कई कई पैवन्द लगे होते गोया लिबास से भी सुन्नते मुस्त़फ़ा से बे पनाह मह़ब्बत की झलक दिखाई देती थी नीज़ पैवन्द लगाने में भी इस क़दर सादगी इख़्तियार करते कि जिस रंग का कपड़ा मुयस्सर होता उसी को शरफ़ बख़्श देते ।(1)

पड़ोसियों से ह़ुस्ने सुलूक

आप رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अपने पड़ोसियों का बहुत ख़याल रखा करते, उन की ख़बरगीरी फ़रमाते, अगर किसी पड़ोसी का इन्तिक़ाल हो जाता तो उस के जनाज़े के साथ ज़रूर तशरीफ़ ले जाते, उस की तदफ़ीन के बा'द जब लोग वापस हो जाते तो आप तन्हा उस की क़ब्र के पास तशरीफ़ फ़रमा हो कर उस के ह़क़ में मग़फ़िरत व नजात की दुआ फ़रमाते नीज़ उस के अहले ख़ाना को सब्र की तल्क़ीन करते और उन्हें तसल्ली दिया करते । आप के ह़िल्म व बुर्दबारी जूदो सख़ावत और दीगर अख़्लाक़े आ़लिय्या से मुतअस्सिर हो कर लोग उ़म्दा अख़्लाक़ के ह़ामिल और पाकीज़ा सिफ़ात के पैकर हुवे और देहली से अजमेर तक के सफ़र के दौरान तक़रीबन नव्वे लाख अफ़राद मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे ।(2)

अ़फ़्व व बुर्दबारी

आप رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ बहुत ही नर्म दिल और मुतह़म्मिल मिज़ाज सन्जीदा त़बीअ़त के मालिक थे । अगर कभी ग़ुस्सा आता तो सिर्फ़

1....मिरआतुल अस्रार, स. 595 मुलख़्ख़सन

2....मुईनुल अरवाह़, स. 188 बित्तग़य्युर

www.dawateislami.net

दीनी ग़ैरत व ह़मिय्यत की बुन्याद पर आता अलबत्ता ज़ाती त़ौर पर अगर कोई सख़्त बात कह भी देता तो आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ बरहम न होते बल्कि उस वक़्त भी हुस्ने अख़्लाक़ और ख़न्दा पेशानी का मुज़ाहरा करते हुवे सब्र का दामन हाथ से न जाने देते और ऐसा मा'लूम होता कि आप ने उस की ना ज़ैबा बातें सुनी ही न हों।(1)

ख़ौफ़े ख़ुदा

ह़ज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ पर ख़ौफ़े ख़ुदा इस क़दर ग़ालिब था कि आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ हमेशा ख़शिय्यते इलाही से कांपते और गिर्या व ज़ारी करते, ख़ल्क़े ख़ुदा को ख़ौफ़े ख़ुदा की तल्क़ीन करते हुवे इरशाद फ़रमाया करते : ऐ लोगो ! अगर तुम ज़ेरे ख़ाक सोए हुवे लोगों का ह़ाल जान लो तो मारे ख़ौफ़ के खड़े खड़े पिघल जाओ।(2)

पर्दा पोशी

ह़ज़रत ख़्वाजा क़ुत़बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی अपने पीरो मुर्शिद ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की सिफ़ाते मोमिनाना बयान करते हुवे फ़रमाते हैं कि मैं कई बरस तक ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर रहा लेकिन कभी आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ज़बाने अक़्दस से किसी का राज़ फ़ाश

1.....ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, ह़यात व ता'लीमात, स. 39, बित्तग़य्युर

2....मुईनुल अरवाह़, स. 185 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

होते नहीं देखा, आप رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ कभी किसी मुसलमान का भेद न खोलते ।(1)

मुर्शिदे कामिल के मज़ारे मुबारक की ता'ज़ीम

एक मरतबा ह़ज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन ह़सन चिश्ती عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللہِ الۡقَوِی अपने मुरीदीन की तरबिय्यत फ़रमा रहे थे । दौराने बयान जब जब आप की नज़र दाईं त़रफ़ पड़ती तो बा अदब खड़े हो जाते । तमाम मुरीदीन येह देख कर ह़ैरान थे कि पीरो मुर्शिद बार बार क्यूं खड़े हो रहे हैं ? मगर किसी को पूछने की जुरअत न हो सकी । अल ग़रज़ जब सब लोग वहां से चले गए, तो एक मन्ज़ूरे नज़र मुरीद अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : हुज़ूर ! हमारी तरबिय्यत के दौरान आप ने बारहा क़ियाम फ़रमाया इस में क्या ह़िक्मत थी ? ह़ज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللہِ الۡمُبِیۡن ने फ़रमाया : उस त़रफ़ पीरो मुर्शिद शैख़ उ़स्मान हारवनी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللہِ الۡغَنِی का मज़ारे मुबारक है जब भी उस जानिब रुख़ होता तो मैं ता'ज़ीम के लिये उठ जाता, पस मैं अपने पीरो मुर्शिद के रौज़ए मुबारक की ता'ज़ीम में क़ियाम करता था ।(2)

फ़रमाने ग़ौसे आ'ज़म पर सर झुका दिया

जिस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने बग़दादे मुक़द्दस में इरशाद फ़रमाया : قَدَمِیۡ ھٰذِہٖ عَلٰی رَقَبَۃِ کُلِّ وَلِیِّ اللہ या'नी मेरा येह क़दम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हर वली की गर्दन पर है । तो उस वक़्त

1 ....ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, ह़यात व ता'लीमात, स. 41, मुलख़्ख़सन

2 ....आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 114 बित्तग़य्युर

www.dawateislami.net

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ सय्यिदुना मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللہِ الۡقَوِی अपनी जवानी के दिनों में मुल्के ख़ुरासान में वाक़ेअ़ एक पहाड़ी के दामन में इ़बादत किया करते थे, जब आप ने येह फ़रमाने आ़ली सुना तो अपना सर झुका लिया और फ़रमाया : 'بَلۡ قَدَمَاکَ عَلٰی رَاۡسِیۡ وَعَیۡنِیۡ' बल्कि आप के क़दम मेरे सर और आंखों पर हैं।(1)

मुरीदों की फ़िक्र

एक बार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ मक्कए मुकर्रमा की नूर बार फ़ज़ाओं में मुराक़बा कर रहे थे कि हातिफ़े ग़ैब से आवाज़ आई : मांग क्या मांगता है ? हम तुझ से बहुत ख़ुश हैं, जो त़लब करेगा पाएगा। अ़र्ज़ की : या इलाही عَزَّوَجَلَّ मेरे तमाम मुरीदों को बख़्श दे। जवाब आया : बख़्श दिया। अ़र्ज़ की : मौला ! जब तक मेरे तमाम मुरीद जन्नत में न चले जाएं मैं जन्नत में क़दम न रखूंगा।(2)

सुल्त़ानुल हिन्द ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने अपनी ज़िन्दगी के तक़रीबन 81 बरस राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने और मख़्लूक़ को राहे रास्त पर लाने के लिये बसर कर दिये बल्कि कई किताबें भी तह़रीर फ़रमाईं उन में से चन्द किताबों के नाम येह हैं।

1....ग़ौसे पाक के ह़ालात, स. 67

2....तज़्किरए औलियाए बर्रे सग़ीर हिन्द व पाक, स. 32

www.dawateislami.net

आप की तसानीफ़

1. अनीसुल अरवाह़ (पीरो मुर्शिद ख़्वाजा उ़स्मान हारवनी के मल्फ़ूज़ात)
2. कशफ़ुल अस्रार (तसव्वुफ़ के मदनी फूलों का गुल्दस्ता)
3. गन्जुल अस्रार (सुल्त़ान शम्सुद्दीन अल तमश की ता'लीम व तल्क़ीन के लिये लिखी)
4. रिसालए आफ़ाक़ व अन्फ़ुस (तसव्वुफ़ के निकात पर मुश्तमिल)
5. रिसालए तसव्वुफ़ मन्ज़ूम
6. ह़दीसुल मआ़रिफ़
7. रिसालए मौजूदिय्या[1]

मल्फ़ूज़ात

सुल्त़ानुल हिन्द, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में अ़क़ीदत मन्दों और मुरीदों का हर वक़्त हुजूम रहता जिन की ज़ाहिरी व बात़िनी इस्लाह़ के लिये मल्फ़ूज़ात का सिलसिला जारी व सारी रहता । ज़बाने ह़क़्क़े तर्जमान से जो अल्फ़ाज़ निकलते उसे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़लीफ़ए अक्बर व सज्जादा नशीन ह़ज़रते ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي फ़ौरन लिख लिया करते । यूं ह़ज़रते ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي ने अपने पीरो मुर्शिद के मल्फ़ूज़ात पर मुश्तमिल एक किताब तरतीब दी जिस का नाम **'दलीलुल आ़रिफ़ीन'** रखा । इस गुलशने अजमेरी से चन्द महकते फूल मुलाह़ज़ा कीजिये ।

1.... मुईनुल हिन्द ह़ज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी, स. 103 ता 106 मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

1. जो बन्दा रात को बा त़हारत सोता है, तो फ़िरिश्ते गवाह रहते हैं और सुब्ह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अ़र्ज़ करते हैं ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे बख़्श दे येह बा त़हारत सोया था।[1]

2. नमाज़ एक राज़ की बात है जो बन्दा अपने परवर दगार से कहता है, चुनान्चे, ह़दीसे पाक में आया है : اِنَّ الْمُصَلِّيْ يُنَاجِيْ رَبَّه[2] या'नी नमाज़ पढ़ने वाला अपने परवर दगार से राज़ की बात कहता है।[3]

3. जो शख़्स झूटी क़सम खाता है वोह अपने घर को वीरान करता है और उस के घर से ख़ैरो बरकत उठ जाती है।[4]

4. मुसीबत ज़दा लोगों की फ़रयाद सुनना और उन का साथ देना, ह़ाजत मन्दों की ह़ाजत रवाई करना, भूकों को खाना खिलाना, असीरों को क़ैद से छुड़ाना येह बातें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक बड़ा मर्तबा रखती हैं।[5]

5. नेकों की सोह़बत नेक काम से बेहतर और बुरे लोगों की सोह़बत बदी करने से भी बदतर है।

1....ह़िश्त बिह़िश्त, स. 77

2.... کنز العمال، کتاب الصلوۃ، ۴/۱۷۹، حدیث: ۱۹۶۷۰، الجزء الثانی

3....ह़िश्त बिह़िश्त, स. 75

4....ह़िश्त बिह़िश्त, स. 84

5....मुईनुल हिन्द ह़ज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी, स. 124

www.dawateislami.net

6. बद बख़्ती की अ़लामत येह है कि इन्सान गुनाह करने के बा वुजूद भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ख़ुद को मक़्बूल समझे।

7. ख़ुदा का दोस्त वोह है जिस में येह तीन ख़ूबियां हों : सख़ावत दरया जैसी, शफ़्क़त आफ़्ताब की त़रह़ और तवाज़ोअ़ ज़मीन की मानिन्द।[1]

सज्जादा नशीन व ख़ुलफ़ा

हुज़ूर सय्यिदी ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ख़ुलफ़ा में सब से क़रीबी और मह़बूब ह़ज़रते सय्यिदुना कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي थे। ख़्वाजा साह़िब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के विसाले ज़ाहिरी के बा'द आप ही सज्जादा नशीन हुवे।[2] इन के इ़लावा दीगर जलीलुल क़द्र ख़ुलफ़ा में ह़ज़रते क़ाज़ी ह़मीदुद्दीन नागोरी, सुल्त़ानुत्तारिकीन ह़ज़रत शैख़ ह़मीदुद्दीन सूफ़ी और ह़ज़रत शैख़ अ़ब्दुल्लाह बयाबानी (साबिक़ा अजयपाल जोगी) رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का शुमार होता है।[3]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रब बन्दे अपनी तमाम तर ज़िन्दगी उस के अह़काम की बजा आवरी और उस के ज़िक्र में बसर करते हैं, दुन्यवी लज़्ज़तों और आसाइशों को छोड़ कर तब्लीग़ व इशाअ़ते दीन में गुज़ार देते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें

1.... ख़ौफ़नाक जादूगर, स. 25

2.... मुईनुल हिन्द ह़ज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी, स. 95

3.... इक़्तिबासुल अन्वार, स. 388

www.dawateislami.net

बत़ौरे इन्आ़म आख़िरत में तो बुलन्दो बाला दरजात और बे शुमार ने'मतों से सरफ़राज़ फ़रमाता ही है लेकिन दुन्या में भी उन के मक़ाम व मर्तबे को लोगों पर ज़ाहिर करने के लिये कुछ ख़साइस व करामात अ़त़ा फ़रमाता है । ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बे शुमार करामात से नवाज़ रखा था, आइये, उन में से चन्द करामात पढ़िये और अपने दिलों में औलियाए किराम की महब्बत को जगाइये !

﴾1﴿ मुर्दा ज़िन्दा कर दिया

एक बार अजमेर शरीफ़ के ह़ाकिम ने किसी शख़्स को बे गुनाह सूली पर चढ़ा दिया और उस की मां को कहला भेजा कि अपने बेटे की लाश ले जाए । दुख्यारी मां ग़म से निढ़ाल हो कर रोती हुई ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाहे बे कस पनाह में ह़ाज़िर हुई और फ़रयाद करने लगी : आह ! मेरा सहारा छिन गया, मेरा घर उजड़ गया, मेरा एक ही बेटा था ह़ाकिम ने उसे बे क़ुसूर सूली पर चढ़ा दिया । येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जलाल में आ गए और फ़रमाया : मुझे उस की लाश के पास ले चलो । जूं ही आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लाश के क़रीब पहुंचे तो इशारा कर के फ़रमाया : ऐ मक़्तूल ! अगर ह़ाकिमे वक़्त ने तुझे बे क़ुसूर सूली दी है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से उठ खड़ा हो । लाश में फ़ौरन ह़रकत पैदा हुई और देखते ही देखते वोह शख़्स ज़िन्दा हो कर खड़ा हो गया ।[1]

1.....ख़ौफ़नाक जादूगर, स. 16 बित्तग़य्युर

www.dawateislami.net

﴾2﴿ अ़ज़ाबे क़ब्र से रिहाई

ह़ज़रते सय्यिदुना बख़्तियार काकी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡکَافِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अपने एक मुरीद के जनाज़े में तशरीफ़ ले गए, नमाज़े जनाज़ा पढ़ा कर अपने दस्ते मुबारक से क़ब्र में उतारा। तदफ़ीन के बा'द एक एक कर के सब लोग चले गए मगर हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ क़ब्र के पास तशरीफ़ फ़रमा रहे। अचानक आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ग़मगीन हो गए। कुछ देर के बा'द आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ज़बान पर اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ जारी हुवा और आप मुत़मइन हो गए। मेरे इस्तिफ़्सार पर फ़रमाया : इस के पास अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते आ गए थे जिस की वजह से मैं परेशान हो गया इतने में मेरे मुर्शिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा उ़स्मान हारवनी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی तशरीफ़ लाए और फ़िरिश्तों से कहा : येह बन्दा मेरे मुरीद मुईनुद्दीन का मुरीद है, इस को छोड़ दो। फ़िरिश्तों ने कहा : येह बहुत ही गुनहगार शख़्स था। यकायक ग़ैब से आवाज़ आई : ऐ फ़िरिश्तो ! हम ने उ़स्मान हारवनी के सदक़े मुईनुद्दीन चिश्ती के मुरीद को बख़्श दिया।[1]

﴾3﴿ छागल में तालाब

हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के चन्द मुरीद एक बार अजमेर शरीफ़ के मश्हूर तालाब अना सागर पर ग़ुस्ल करने गए तो

1....ख़ौफ़नाक जादूगर, स. 8

www.dawateislami.net

काफ़िरों ने शोर मचा दिया कि येह मुसलमान हमारे तालाब को '**नापाक**' कर रहे हैं । चुनान्चे, वोह ह़ज़रात लौटे और सारा माजरा ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ख़िदमत में अ़र्ज़ कर दिया । आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने एक ख़ादिम को छागल (पानी रखने का मिट्टी का बरतन) देते हुवे इरशाद फ़रमाया : इस में तालाब का पानी भर लाओ । ख़ादिम ने जूं ही पानी भरने के लिये छागल तालाब में डाला तो उस का सारा पानी छागल में आ गया । लोग पानी न मिलने पर बे क़रार हो गए और आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ख़िदमते सरापा करामत में ह़ाज़िर हो कर फ़रयाद करने लगे चुनान्चे, आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने ख़ादिम को हुक्म दिया कि जाओ और पानी वापस तालाब में उंडेल दो । ख़ादिम ने हुक्म की ता'मील की तो अना सागर फिर पानी से लबरैज़ हो गया ।[1]

﴾4﴿ अल्लाह वालों का तसर्रुफ़

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का एक मुरीद राजा के हां मुलाज़िम था । राजा को जब अपने उस मुलाज़िम के इस्लाम लाने की ख़बर हुई तो उस पर ज़ुल्म करने लगा । हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को पता चला तो आप ने राजा को ज़ुल्म से बाज़ रहने का हुक्म भेजा लेकिन वोह ज़ालिमो जाबिर शख़्स इक़्तिदार के नशे में मस्त था कहने लगा : येह कौन आदमी है जो यहां बैठ कर हम पर हुक्म चला रहा है ? आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को ख़बर पहुंची तो फ़रमाया : हम ने उसे गिरिफ़्तार कर के लश्करे इस्लाम के ह़वाले कर दिया । अभी चन्द ही

1.... ख़ौफ़नाक जादूगर, स. 7

www.dawateislami.net

दिन गुज़रे थे कि सुल्तान मोइज़ुद्दीन मुहम्मद गौरी ने उस शहर पर हम्ला कर दिया। राजा अपनी फ़ौज के हमराह मुक़ाबला करने आया मगर लश्करे इस्लाम की जुरअत व बहादुरी के आगे ज़ियादा देर न ठहर सका बिल आख़िर हथयार डाल कर इब्रत नाक शिकस्त से दो चार हुवा और सिपाहियों ने उसे ज़िन्दा गिरिफ़्तार कर के इन्तिहाई ज़िल्लत के साथ सुल्तान गौरी के सामने पेश कर दिया।(1)

﴾5﴿ हर रात तवाफ़े का'बा

हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का कोई मुरीद या अहले महब्बत अगर हज या उमरह की सआदत पाता और तवाफ़े का'बा के लिये हाज़िर होता तो देखता कि ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه तवाफ़े का'बा में मश्ग़ूल हैं, उधर अहले ख़ाना और दीगर अहबाब येह समझते कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने हुजरे में मौजूद हैं। बिल आख़िर एक दिन येह राज़ खुल ही गया कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बैतुल्लाह शरीफ़ हाज़िर हो कर सारी रात तवाफ़े का'बा में मश्ग़ूल रहते हैं और सुब्ह अजमेर शरीफ़ वापस आ कर बा जमाअत नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाते हैं।(2)

﴾6﴿ अनोखा ख़ज़ाना

हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के आस्तानए मुबारका पर रोज़ाना इस क़दर लंगर का एहतिमाम होता कि

1....इक़्तिबासुल अन्वार, स. 368

2....इक़्तिबासुल अन्वार, स. 373

www.dawateislami.net

शहर भर से ग़ुरबा व मसाकीन आते और सैर हो कर खाते । ख़ादिम जब अख़राजात के लिये आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में दस्त बस्ता अ़र्ज़ करता तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुसल्ले का कनारा उठा देते जिस के नीचे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से ख़ज़ाना ही ख़ज़ाना नज़र आता । चुनान्चे, ख़ादिम आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हुक्म से ह़स्बे ज़रूरत ले लेता ।(1)

विसाले पुर मलाल

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ के विसाल की शब बा'ज़ बुज़ुर्गों ने ख़्वाब में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : मेरे दीन का मुईन ह़सन सन्जरी आ रहा है मैं अपने मुईनुद्दीन के इस्तिक़्बाल के लिये आया हूं । चुनान्चे, 6 रजबुल मुरज्जब 633 हिजरी ब मुताबिक़ 16 मार्च 1236 ईसवी बरोज़ पीर फ़ज्र के वक़्त मुह़िब्बीन इन्तिज़ार में थे कि पीरो मुर्शिद आ कर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाएंगे मगर अफ़्सोस ! उन का इन्तिज़ार करना बे सूद रहा । काफ़ी देर गुज़र जाने के बा'द जब ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हुजरे शरीफ़ का दरवाज़ा खोल कर देखा गया तो ग़म का समन्दर उमंड आया, ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजए ख़्वाजगान सुल्तानुल हिन्द, मुईनुद्दीन ह़सन चिश्ती अजमेरी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی विसाल फ़रमा चुके थे । और देखने वालों ने येह हैरत अंगेज़ रूहानी मन्ज़र अपनी आंखों से देखा कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ की नूरानी पेशानी पर येह इबारत नक़्श थी حَبِیْبُ اللهِ مَاتَ فِیْ حُبِّ اللهِ

1....इक़्तिबासुल अन्वार, स. 376

www.dawateislami.net

(या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महबूब बन्दा महब्बते इलाही में विसाल कर गया।)[1]

मज़ार शरीफ़ और उ़र्स मुबारक

सुल्तानुल हिन्द, ख़्वाजा मुईनुद्दीन ह़सन चिश्ती अजमेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی का मज़ारे अक़्दस हिन्द के मश्हूर शहर **अजमेर शरीफ़** (सूबए राजस्थान शिमाली हिन्द) में है। जहां हर साल आप का उ़र्स मुबारक 6 रजबुल मुरज्जब को निहायत तुज़्क व एह़तिशाम के साथ मनाया जाता है और इसी तारीख़ की निस्बत से उ़र्स मुबारक को **'छटी शरीफ़'** भी कहा जाता है इस उ़र्स में मुल्क व बैरूने मुल्क से हज़ारों अफ़राद बड़े जोश व जज़्बे से शिर्कत कर के ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से अपनी अ़क़ीदत का इज़हार करते हैं।

ख़्वाजा के सदक़े सिह़्ह़त याबी

आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ह़ज़रत ख़्वाजा (ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) के मज़ार से बहुत कुछ फ़ुयूज़ो बरकात ह़ासिल होते हैं, मौलाना बरकात अह़मद साह़िब मर्ह़ूम जो मेरे पीर भाई और मेरे वालिदे माजिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के शागिर्द थे उन्हों ने मुझ से बयान किया कि मैं ने अपनी आंखों से देखा कि एक ग़ैर मुस्लिम जिस के सर से पैर तक फोड़े थे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है कि किस क़दर थे, ठीक दोपहर

---

1 .... **अल्लाह** के ख़ास बन्दे अ़ब्दुहू, स. 521 मुलख़्ख़सन वग़ैरा

www.dawateislami.net

को आता और दरगाह शरीफ़ के सामने गर्म कंकरों और पथ्थरों पर लौटता और कहता ''ख़्वाजा अगन (या'नी ऐ ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जलन) लगी है।'' तीसरे रोज़ मैं ने देखा कि बिल्कुल अच्छा हो गया है।(1)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मजलिसे मज़ाराते औलिया

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी दुन्या भर में नेकी की दा'वत आ़म करने, सुन्नतों की ख़ुश्बू फैलाने, इ़ल्मे दीन की शम्एं जलाने और लोगों के दिलों में औलियाउल्लाह की मह़ब्बत व अ़क़ीदत बढ़ाने में मसरूफ़ है। तादमे तह़रीर दुन्या के कमो बेश 200 मुमालिक में इस का मदनी पैग़ाम पहुंच चुका है। सारी दुन्या में मदनी काम को मुनज़्ज़म करने के लिये तक़रीबन 92 से ज़ियादा मजालिस क़ाइम हैं, इन्ही में से एक 'मजलिसे मज़ाराते औलिया' भी है जो दीगर मदनी कामों के साथ साथ बुज़ुर्गाने दीन के मज़ाराते मुबारका पर ह़ाज़िर हो कर मुख़्तलिफ़ दीनी ख़िदमात सर अन्जाम देती है। मसलन ह़त्तल मक़्दूर साह़िबे मज़ार के उ़र्स के मौक़अ़ पर इजतिमाए ज़िक्रो ना'त का इनइ़क़ाद करती है, मज़ारात से मुल्ह़िक़ा मसाजिद में आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िले सफ़र करवाती और बिल ख़ुसूस उ़र्स के दिनों में मज़ार शरीफ़ के इह़ाते में सुन्नतों भरे मदनी ह़ल्क़े लगाती है जिन में वुज़ू, ग़ुस्ल, तयम्मुम, नमाज़ और ईसाले सवाब का त़रीक़ा, मज़ारात पर ह़ाज़िरी के आदाब और सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें सिखाई जाती हैं नीज़

1.... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 384

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की तरग़ीब भी दिलाई जाती है, अय्यामे उ़र्स में साहि़बे मज़ार की ख़िदमत में ढेरों ढेर ईसाले सवाब के तह़ाइफ़ पेश करती है नीज़ साहि़बे मज़ार बुज़ुर्ग के सज्जादा नशीन, ख़ुलफ़ा और मज़ारात के मुतवल्ली साहि़बान से वक़्तन फ़ वक़्तन मुलाक़ात कर के उन्हें दा'वते इस्लामी की ख़िदमात, जामिआ़तुल मदीना व मदारिसुल मदीना और बैरूने मुल्क में होने वाले मदनी कामों से आगाह करती है।

नेकी की दा'वत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप को मज़ार शरीफ़ पर आना मुबारक हो, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से सुन्नतों भरे मदनी ह़ल्क़ों का सिलसिला जारी है, यक़ीनन ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है, हम लम्ह़ा ब लम्ह़ा मौत की त़रफ़ बढ़ते चले जा रहे हैं, अ़न क़रीब हमें अन्धेरी क़ब्र में उतरना और अपनी करनी का फल भुगतना पड़ेगा, इन अनमोल लम्ह़ात को ग़नीमत जानिये और आइये ! अह़कामे इलाही पर अ़मल का जज़्बा पाने, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें और **अल्लाह** के नेक बन्दों के मज़ारात पर ह़ाज़िरी के आदाब सीखने सिखाने के लिये मदनी ह़ल्क़ों में शामिल हो जाइये। **अल्लाह** तआ़ला हम सब को दोनों जहां की भलाइयों से माला माल फ़रमाए।

اٰمین بجاہِ النبی الامین صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	ख़ौफ़े ख़ुदा	15
विलादते बा सआ़दत	2	पर्दा पोशी	15
नाम व सिलसिलए नसब	3	मुर्शिदे कामिल के मज़ार मुबारक की ता'ज़ीम	16
वालिदैने करीमैन	3	फ़रमाने ग़ौसे आ'ज़म पर सर झुका दिया	16
वलिय्युल्लाह के जूठे की बरकत	4	मुरीदों की फ़िक्र	17
हुसूले इल्म के लिये सफ़र	6	आप की तसानीफ़	18
त़ालिब मत़लूब के दर पर	7	मल्फ़ूज़ात	18
यक दर गीर मोह्कम गीर	7	सज्जादा नशीन व ख़ुलफ़ा	20
मुरीद हो तो ऐसा	8	(1) मुर्दा ज़िन्दा कर दिया	21
बारगाहे इलाही में मक़्बूलिय्यत	8	(2) अ़ज़ाबे क़ब्र से रिहाई	22
बारगाहे रिसालत से हिन्द की सुल्त़ानी	9	(3) छागल में तालाब	22
सुल्त़ानुल हिन्द का सफ़रे हिन्द	10	(4) अल्लाह वालों का तसर्रुफ़	23
हम अ़स्र उ़लमा व औलिया से मुलाक़ात	10	(5) हर रात त़वाफ़े का'बा	24
ह़ाकिमे सब्ज़वार की तौबा	11	(6) अनोखा ख़ज़ाना	24
दाता के मज़ार पर ख़्वाजा की ह़ाज़िरी	12	विसाले पुर मलाल	25
तिलावते कुरआन और शब बेदारी	13	मज़ार शरीफ़ और उ़र्स मुबारक	26
पेट का कुफ़्ले मदीना	13	ख़्वाजा के सदक़े सिह़्ह़त याबी	26
लिबास मुबारक और सादगी	13	मजलिसे मज़ाराते औलिया	27
पड़ोसियों से हुस्ने सुलूक	14	नेकी की दा'वत	28
अ़फ़्व व बुर्दबारी	14	माख़ज़ो मराजेअ़	30

www.dawateislami.net

ماخذومراجع

نمبر شمار	کتاب	مطبوعہ
1	سنن الترمذی	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
2	سنن ابی داود	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱ھ
3	شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
4	کنز العمال	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹
5	مراٰۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلیکیشنز مرکز الاولیاء لاہور
6	اقتباس الانوار	الفیصل ناشران وتاجران کتب مرکز الاولیاء لاہور
7	مراٰۃ الاسرار	الفیصل ناشران وتاجران کتب مرکز الاولیاء لاہور
8	معین الارواح	باب المدینہ کراچی
9	تذکرہ اولیائے برصغیر ہندوپاک	ملک اینڈ کمپنی، مرکز الاولیاء لاہور
10	معین الہند حضرت خواجہ معین الدین اجمیری	زاویہ پبلشرز مرکز الاولیاء لاہور
11	حضرت خواجہ غریب نواز حیات وتعلیمات	ابوالحسنات اسلامک ریسرچ سینٹر حیدرآباد دکن الہند
12	ہشت بہشت	پروگریسو بکس، مرکز الاولیاء لاہور
13	اللہ کے خاص بندے عبدہ	علم دین پبلشرز مرکز الاولیاء لاہور
14	آدابِ مرشد کامل	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
15	غوثِ پاک کے حالات	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
16	خوفناک جادوگر	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عزوجل तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात मग़रिब की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل

ISBN 978-969-631-346-5
0125076

MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
- अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
- मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
- ह़ैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, ह़ैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net